



* जै श्रीराम *

जेकमाबाद सिंधु देश में, सुन्दर मीरपुर ग्राम ।
सन्त श्रोमणि जहं वसें स्वामी आत्मा राम ॥
तिनके प्रेमी शिष्य थे भक्त श्री रोचल दास ।
सुख देवी तांकी प्रिया दोऊ प्रेम गुण रास ॥
प्रगटियो तिनकी गोद में बालक श्रीखण्डि चन्द ।
गुणनिधि रसनिधि रूपनिधि सुखनिधि सुषमा कन्द ॥
चैत्र पूर्णिमा शुभ तिथि दिन सोमवार सुख सार ।
साकेत स्वामिनि सहचरि लियो सन्त अवतार ॥

बचपन से सियाराम को कीन्हो नाम उचार ।
मात तात गुर हृदय को दीन्हो हर्ष अपार ॥
जप साहिब अर्थ विचार में नित नित भाव नवीन ।
बन बन डोलत मग्न हुवे गुर वाणी रस लीन ॥
कोट कांगड़े में गए सोलह वर्ष कुमार ।
अविनाश चन्द्र महाराज से ली दीक्षा सुखसार ॥
अष्ट मास गुर सेव में तन्मय आठो याम ।
गुर आज्ञा से लोक हित लौटे मीर पुर धाम ॥
श्रीराधा नाम कीर्तन को कियो जगत विस्तार ।
दुःख द्वन्द अविद्या मिटी सुखित भयो संसार ॥
गुरू नानक की आज्ञा भई कियो वृन्दाविपिन निवास ।
विचरहि नित बृज बननि में दिन दिन अधिक हुलास ॥
नीच ऊच को भेद नहि सबहनि को दे दान ।
चरण छुअत झुक झुक के गोपी कृष्ण मय जान ॥
बृज गोपियो के प्रेम की कथा सुनी रस सार ।
स्वामी अखण्डानन्द सों बाढियो प्रेम अपार ॥
नित आदर सत्संग नित नित नित नेह नवीन ।
रस मय, सुख मय नेह मय प्रेम परा प्रवीन ॥
साई कोकिल भाव में रहें मग्न दिन रैन ।
नित प्रति सियाराम को चाहत है सुख चैन ॥
स्नेह सिय पद कमल सों मुख में श्री राधा नाम ।
चिन्तन अवध समाज को बसत वृन्दाबन धाम ॥

श्रीभक्त कोकिल—एक महान सन्त

संस्कृत में जैसे ‘कोविद्’ शब्द का अर्थ है— कौन है इनके समान विद्वान् । इसी प्रकार ‘कोकिल’ शब्द का अर्थ है—कौन है इनके समान मधुर संगीत का गायक । वस्तुतः भक्त कोकिल जी दिव्य भगवद् राज्य के एक पार्षद थे— भगवान् की विशेष सहचरी ! उन्होंने अपने संगीत के रस से शुष्क मरुस्थल को रस गंगा से तर कर दिया । वे भगवान् के विशेष कृपापात्र सेवक, सहचरी, सब कुछ थे । उनके सम्पर्क में जो आया—चाहे वह कितना भी अयोग्य क्यों न हो, भगवान् के सम्मुख कर दिया । विशेष लिखने की आवश्यकता नहीं, उनके प्रिय—वचन, मधुर भाव, भगवत् स्पर्शी ज्ञान आप स्वयं करेंगे और देखेंगे कि आपका जीवन—वन कल्पलता के सरस फलों के आस्वादप से तृप्त हो रहा है ।

मैं आनन्द पूर्वक उन्हें शुभ आशीर्वाद देता हूँ—

“युग युग जीओं साईं, खीर—खण्डु पीओ साईं ।”

अनन्त विभूषित

श्रीस्वामी अखण्डानन्द जी सरस्वती